कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 08, (जनवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 08–10

गिलोय (*टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया*) की वैज्ञानिक खेती विधि और रासायनिक घटक

वैशाली कुमारी[1], शैलेन्द्र कुमार यादव[2], शुभम गंगवार[3] एवं अंकित तिवारी[4]

[1]एम. एस सी, छात्रा, भू द्रश्य एवं पुष्प विज्ञान विभाग,
[2]शोधार्थी छात्र, कृषि विस्तार एवं संचार विभाग,
[1, 2] सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि विश्वविद्यालय, मेरठ
[3]शोधार्थी छात्र, फसलोत्तर प्रौद्योगिकी विभाग,
बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बाँदा
[4]शिक्षण सहयोगी, कृषि विज्ञान विभाग,
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर, भारत।

Email Id: horticultureshubham@gmail.com

परिचय

गिलोय की लता आमतौर पर जंगलों, खेतों की मेड़ों, पहाड़ों की चट्टानों आदि स्थानों पर कुण्डलाकार चढ़ती हुई पाई जाती है। यह नीम, आम के पेड़ के आसपास भी पाई जाती है। जिस पेड़ को यह अपना आधार बनाता है उसके गुण भी इसमें शामिल होते हैं। नीम पर गिलोय सर्वोत्तम औषधि मानी जाती है। इसका तना छोटी उंगली से लेकर अंगूठे जितनी मोटी होता है। बहुत पुरानी गिलोय में यह भुजा जितनी मोटी भी हो सकती है। इसमें जगह–जगह से जड़ें निकलती हैं और नीचे की ओर झूलती रहती हैं। चट्टानों या खेत के मेड़ों पर जड़ें जमीन में घुस जाती हैं और अन्य लताओं को जन्म देती हैं ।

गिलोय (*टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया*) का वानस्पतिक विवरणः–

टी. कॉर्डिफोलिया एक व्यापक रूप से फैला हुआ चिकना, द्विअर्थी बारहमासी, पर्णपाती, और चढ़ने वाला पौधा है, जिसमें बहुत पतली, हरे रंग की रसीली त्वचा होती है जो पतली भूरी छाल से ढकी होती है जो काटने पर अंदर से गोल दिखाई देती है और सूखने पर तना सिकुड़ जाता है, और छाल लकड़ी से अलग हो जाती है। पत्ते दिल के आकार के, पान के पत्तों की तरह होते हैं। इनका व्यास लगभग 2 से 4 इंच होता है। डंठल लगभग 1 से 3 इंच लंबा होता है। गर्मियों में फूल छोटे पीले गुच्छों में आते हैं साथ ही फल भी गुच्छों में लगते हैं जोकि छोटे मटर के आकार के होते हैं, पकने पर ये खून की तरह लाल हो जाते हैं। बीज सफेद, चिकने, कुछ टेढ़े और मिर्च के दानों के समान होते हैं।

वैसे तो पूरे पौधे का उपयोग औषधि के लिए किया जाता है लेकिन गिलोय के तने में सबसे अधिक लाभ होता है, साथ साथ गिलोय की जड़ें और पत्तियां औषधीय प्रयोजन के लिए उपयोग की जाती हैं। यह प्रमुख जड़ी–बूटियों में से एक है जिसका उपयोग और मानव स्वास्थ्य लाभ के लिए खाद्य एवं औषधि प्रशासन द्वारा अनुमोदित किया गया है। गिलोय के तने का उपयोग, जूस काढ़ा और चाय (हरी चाय की तरह) बनाने के लिए किया जाता है, इसे जूस पाउडर या कैप्सूल के रूप में भी बेचा जाता है। यह ज्वरनाशक, ऐंठनरोधी, माइक्रोबियलरोधी और कई अन्य औषधीय गुणों से युक्त है जिसका उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार में किया जाता है। यह एक बड़ी, चमकदार पर्णपाती चढ़ाई वाली झाड़ी है । ऐसा माना जाता है कि इस पौधे के सभी भागों से मानव स्वास्थ्य को लाभ होता है ।

गिलोय के प्रकारः–

लोकप्रियता के अनुसार गिलोय तीन प्रकार की होती है।

(1) गुडुची– *टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया* (जंगली)

(2) कंदद्भव गुडुची– टीनोस्पोरा साइनेंसिस या टीनोस्पोरा मालाबारिका

(3) पद्मा गुडुची– गंगाधर द्वारा उल्लेख किया गया

मिट्टी और जलवायु

यह लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में अच्छी तरह से विकसित हो सकता है लेकिन अच्छे जल निकासी के साथ कार्बनिक पदार्थ से भरपूर हल्की रेतीली दोमट मिट्टी उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के लिए गिलोय की फसल और पौधे के लिए उपयुक्त है। यह पौधा बहुत कठोर होता है और इसे लगभग सभी जलवायु में उगाया जा सकता है लेकिन यह गर्म जलवायु को पसंद करता है, परन्तु यह जल जमाव की स्थिति के प्रति संवेदनशील है।

रोपण का समयः–

वर्षा ऋतु (जुलाई से अगस्त)

बीज के द्वारा :– (मई–जुलाई)

पौधे का प्रसारः–

- तना कटिंग के द्वारा (तने की कटिंग व्यावसायिक फसलें उगाने के लिए सबसे अच्छी रोपण विधि है)।
- तने की कलमों को सीधे खेत में बोया जाता है। गांठों वाले पुराने तनों से कटिंग प्राप्त की जाती है। कटिंग को मदर प्लांट से हटाने के 24 घंटे के भीतर बोया जाना चाहिए। इस बीच, उन्हें पानी में आधा पानी में लंबवत रूप से डूबा रहना चाहिए। 1 हेक्टेयर भूमि में रोपण के लिए लगभग 2500 कलमों की आवश्यकता होती है।
- 6–8 इंच लंबाई लंबे तने के साथ दो गांठों वाली छोटी उंगली की मोटाई की कटिंग का उपयोग किया जाता है और आई.बी.ए. के 2500 पी.पी.एम. के घोल में त्वरित डिप विधि द्वारा डुबोया जाता है तद्पचात ये खेत में लगाने के लिए तैयार होते है।
- पौधे को बीज का उपयोग करके भी उगाया जा सकता है। बीजों को परिपक्व होने में लगभग दोगुना समय लगता है इस लिये इस का उपयोग व्यावसायिक रूप से नहीं किया जाता है ।

उर्वरक :–

औषधीय पौधों को बिना रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग के उगाना चाहिए। प्रजातियों की आवश्यकता के अनुसार जैविक खाद जैसे गोबर के खाद 10 टन/हेक्टेयर, या वर्मी–कम्पोस्ट, हरी खाद आदि का उपयोग किया जा सकता है। इसे भूमि की तैयारी के समय खेत में मिला देना चाहये । बीमारियों से बचाव के लिए, जैव–कीटनाशक नीम (गुठली, बीज और पत्तियां), चित्रकमूल, धतूरा, गाय के मूत्र आदि से (या तो एकल या मिश्रण) तैयार किया जा सकता है। खेत की स्थितियों में, तने की कलमों को गांठों के साथ सीधे खेत में बोया जाता है। बेहतर उपज के लिए 3 मीटर × 3 मीटर की इष्टतम दूरी की सबसे अच्छी मानी जाती है ।

सिंचाईः–

पौधारोपण के बाद खेत की समय–समय पर सिंचाई इस प्रकार करनी चाहिएः–

गर्मी के मौसम मेंः– छह से सात दिन के अन्तराल पर

सर्दी के मौसम मेंः– महीने में दो बार

वर्षा ऋतु मेंः– मृदा में जल की आवश्यकतानुसार

कटाई– कटाई के बाद की प्रक्रियाः –

परिपक्व पौधों को इकट्ठा किया जाता है, छोटे टुकड़ों में काटा जाता है और छाया में सुखाया जाता है। इस की उपज–लगभग 8–10 क्विं./ हे तक जाती है।

रासायनिक गुणः–

"गिलोय" या "अमृता" या "गुडुची" एक कुण्डलाकार चढ़ाई करने वाली झाड़ी है, जो की

लगभग पूरे भारत में पाई जाती है। तने और जड़ें कई यौगिक लाभदायक रसायन का एक अभिन्न घटक हैं। यह भारत में आयुर्वेदिक चिकित्सा में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और इसमें परिवर्तनकारी, मूत्रवर्धक और कामोत्तेजक गुण होते हैं। यह एक ज्वरनाशक है जिसका उपयोग मलेरिया और जीर्ण ज्वर में किया जाता है। यह एक लीवर टॉनिक भी है। अध्ययनों में पौधे के विभिन्न औषधीय गुणों की सूचना दी गई है, जिनमें एंटीस्पास्मोडिक, एंटीडायबिटिक, एंटी–गठिया, एंटीपीरियोडिक, एंटी–इंफ्लेमेटरी, एंटीऑक्सिडेंट, एंटीस्ट्रेस, एंटी–एलर्जी, एंटीमलेरियल, हेपेटोप्रोटेक्टिव, एंटीलेप्रोटिक, एंटीनोप्लास्टिक और इम्यूनोमॉड्यूलेटरी गतिविधियां शामिल हैं।

टी. कॉर्डिफोलिया के रासायनिक घटकः–

गिलोय (*टी. कॉर्डिफोलिया*), पौधे के अर्क, विभिन्न प्रकार के यौगिक हैं जो पौधे या मेजबान प्रणाली के भीतर जैविक लक्षणों की अभिव्यक्ति के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार हैं। इसमें अकड़ों, अल्कलॉयड्स, ग्लुकोसाइड्स, स्टरॉल्स, टैनिन्स, फ्लावोनॉयड्स, और लिनेन शामिल होते हैं। इन रासायनिक घटकों के कारण गिलोय को अनेक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने की क्षमता होती है

पोधे के प्रयुक्त भागः–

- **तनाः–** गिलोय का तना कड़वा, पेट बढ़ाने वाला, मूत्रवर्धक, पित्त स्राव को उत्तेजित करने वाला, कब्ज पैदा करने वाला, प्यास, जलन, उल्टी को शांत करने वाला, रक्त को बढ़ाने वाला और पीलिया को ठीक करने वाला होता है।

- **जड़ेंः –** *टी. कॉर्डिफोलिया* की जड़ और तने को अन्य दवाओं के साथ मिलाकर सांप के काटने और बिच्छू के काटने पर एंटी–डोट के रूप में दिया जाता है।

- **पत्तियांः–** बुखार में पत्तियों का रस या काढ़ा शहद के साथ दिया जाता है।

टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया (गिलोय) की पोषक संरचनाः–

- फाइबरः –15–9%
- प्रोटीनः– 4–5 % 11–2%
- कार्बोहाइड्रेटः –61–66%
- वसाः– 3–1%

टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया (गिलोय) का पोषक मूल्यः–

- कैलोरीः–292–54 / 100 ग्राम
- पोटैशियमः –0–845%
- क्रोमियमः –0–006%
- आयरनः–0–28%
- कैल्शियमः –0–131%

गिलोय के उपयोग की आदर्श विधिः–

- गिलोय के चार इंच ताजे तने को पीसकर एक कप पानी में पांच मिनट के लिए डाल दें और फिर दिन में एक बार इसका प्रयोग करें।
- गिलोय का सत्व भी लिया जा सकता है, इसका सेवन प्रतिदिन किया जा सकता है ।

गिलोय के आयुर्वेदिक फायदेः

- **इम्यून सिस्टम को मजबूत करेंः** गिलोय में मौजूद रसायनिक घटक इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं और रोगों से बचाव करने में सहायक हो सकते हैं।
- **अन्ति–ऑक्सीडेंट गुणधर्मः** गिलोय में पाए जाने वाले अन्ति–ऑक्सीडेंट्स शरीर को रद्दीबाजी से बचाने में मदद कर सकते हैं और ऊर्जा को बढ़ा सकते हैं।
- **डायबिटीज का प्रबंधनः** गिलोय मधुमेह के प्रबंधन में सहायक हो सकता है और रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।
- **ज्वर का उपचारः** गिलोय उच्च तापमान या ज्वर को कम करने में सहायक हो सकता है और शरीर को स्वस्थ रखने में मदद कर सकता है।

समापनः

गिलोय को वैज्ञानिक रूप से खेती करना और इसके रासायनिक घटकों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है ताकि इसका सही तरीके से उपयोग किया जा सके और लोगों को इसके लाभ मिल सके। गिलोय को सही तरीके से खेती करने के लिए उचित धान, पानी, और सूर्य प्रबंधन की आवश्यकता है ताकि यह समृद्धि कर सके और उच्च गुणवत्ता वाला उत्पादन कर सके। इसके साथ ही, इसके रासायनिक घटकों का अध्ययन करने से हम इसे औषधीय रूप में सही तरीके से उपयोग कर सकते हैं और लोगों को स्वस्थ रहने में मदद कर सकते हैं।